



१९२३ ई० सँ प्रतिवर्ष प्रकाशित एवं प्रामाणिक

मिथिलादेशीय मकरन्दानुसारि

राजा : मंगल

मन्त्री : शुक्र वर्धा ९

धान्य ११

विद्यापति-पञ्चाङ्गम् सन् १४०० साल

वि० सं० २०४९-५०; शकः १९१४-१५; अ० १९९२-९३ ई०; ल० सं० ८८३ - ८४; भारतीय स्वतन्त्रताब्द ४५-४६; ने० सं० १११२-१३

पुस्तकभंडार, पटना - ८०० ००४

मूल्य : १० टका

एवांग लेखक : प० श्री रमानन्द झा, गणित-कलित ज्योतिषाचार्य एवं बराहमिहिर तथा सहयोगी : प० श्री देवकीनन्दन झा, प्रधानाध्यापक : महेन्द्र संस्कृत विद्यालय, राधापुर, वि० सीतामढ़ी।

[illegible][illegible]

२. अभावरथा एते शुभरा सादं के लइदि, जगद्विजयि २/३०-

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible]

[illegible]

संख्या २०४६, गक्र: १९६१५, एम् १४०० काल, खं दिनाम्बर-जनवरी १९६२-६३ ई०। (१= अतिरिक्त विगणकार) विनोदं च तयावधुम्। विनोदमयापसन्नतर विनोदं प्रितानंम्। "एहिमन्मसं कथयत वसुवी।

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]